राजस्थान के रीति-रिवाज

- जन्म से सम्बान्धीत
- विवाह से सम्बान्धीत
- मृत्यु से सम्बान्धीत

① जन्म से सम्बान्धीत :- (16) संस्कार

(1) गर्भाधान संस्कार :-

→ नवविवाहित महिला के द्वारा पहली बार गर्भ को धारण किया जाता है।

(2) पुंसवन संस्कार :-

→ गर्भ में पल रहे शिशु को पुत्र रूप में प्राप्त करने हेतु किया जाने वाला संस्कार कहलाता है।

(3) सीमन्तोनयन संस्कार :-

→ गर्भवती महिला को अमंगलकारी शक्तियों से बचाने हेतु किया जाने वाला संस्कार सीमन्तोनयन संस्कार कहलाता है।

(4) जातकर्म :-

→ शिशु के जन्म पर किया जाने वाला संस्कार जातकर्म संस्कार कहलाता है।

⑤ नामकरण संस्कार

→ शिशु के जन्म के 10 से 12 दिन के बाद नामकरण करना

⑥ सूर्यपूजन / पनघट पूजन / जलवा पूजन / बाहर निकालना :—

→ शिशु के जन्म के 3 से 4 माह बाद शिशु को पहले बार सूर्य के दर्शन कराना ।

⑦ अन्नप्रशान्न :—

→ शिशु के जन्म के 6 माह बाद अन्न देना

⑧ जडूल्पा / चूडाकर्म / मुंण्डन :—

→ बालक के 4 से 5 वर्ष बाद पहले बार सिर के बाल कटवाना ।

⑨ कर्णवेद संस्कार :—

→ बालक के 5 से 4 वर्ष बाद कानो का छिदवाना

⑩ विद्यारम्भ संस्कार :—

→ बालक को घर के सदस्यो के द्वारा अक्षर ज्ञान करवाना

⑪ उपनयन संस्कार / जनेऊ संस्कार :—

→ बालक को शिक्षा प्राप्त हेतु गुरु के आश्रम में छोडना ।

⑫ वेदारम्भ संस्कार :—

→ गुरु के द्वारा बालको को सर्वप्रथम वेदो का ज्ञान देना ।

⑬ केशान्त / गोदान संस्कार :—

→ 16 वर्ष की उमर में सिर के बाल कटवाना ।

विवाह के संस्कार

★ सामेला / सामेल संस्कार :—

→ वधू के पिता के द्वारा बारातियो का स्वागत करना ।

★ कांकड्लू संस्कार —

→ दुल्हे के द्वारा तोरण मारते समय महिला के द्वारा गाया जाने वाला लोकगीत ।

★ कामण संस्कार :—

→ दुल्हे को जादु-टोने से बचाने हेतु गाया जाने वाला लोकगीत

★ बरी मड़ला / दापड़ :—

→ वर के पक्ष से वधू पक्ष को दी जाने वाली नागरिक सामग्री

★ दुपट्टा संस्कार :—

→ दुल्हे की सालियों के द्वारा पाणिग्रहण संस्कार के अवसर पर किया जाने वाला संस्कार

★ बिनौटा संस्कार :—

→ वर व वधू की जूतियां ।

★ बादर / बढ़ैर / जानोटण संस्कार :—

→ दुल्हे के द्वारा दिया जाने वाला प्रतिभोज

★ जेनवार संस्कार :—

→ दुल्हन के द्वारा दिया जाने वाला संस्कार

★ कन्यावल संस्कार :—

→ वधू के माता पिता द्वारा रखा जाने वाला उपवास / व्रत

★ सीठणे संस्कार :—

→ राज० का प्रसिद्ध गाली गीत

★ कोथला / दहेज संस्कार —

→ वधू पक्ष की ओर से वर पक्ष को दी जाने वाली सामग्री

★ औलन्दी संस्कार :—

→ वधू के साथ भेजी जाने वाली कुंवारी कन्या ।

★ टूटिया संस्कार :—

→ दूल्हे के घर रही शेष महिलाओ के द्वारा काल्पनिक विवाह करना (सुहागधारण करना ।

★ पाणिग्रहण संस्कार :—

→ वर व वधू के द्वारा सात फेरे लेना ।

★ मधुगण संस्कार :—

→ विवाह के अवसर पर (रसोई में) प्रयोग ली जाने वाली लकड़ीया

★ इकताई संस्कार :—

→ वर वधू के वस्त्रो का नाप लेना

★ डावरिया प्रथा :—

→ प्राचीन समय में राजा महाराजो की पुत्रीयो के विवाह पर हजारो कुंवारी कन्याओ को दहेज देना ।

→ मृत्यु से सम्बन्धीत संस्कार —

★ बैकुण्ठी संस्कार :—

→ मृत शरीर (शव) को शमसान ले जाने हेतु बास की लकडीयो से निर्मित आकृति।

★ बखेर संस्कार —

→ अर्थी पर सिक्के उचालना।

★ पिण्डदान संस्कार :—

→ आटे से बनी गोलियो को मच्छलीयो व गॉयो को खिलाना।

★ अधेटा संस्कार :—

→ शमशान के अतिंम चौराहे पर अर्थी की दिशा परिवर्तित करना।

★ अत्येष्टि संस्कार :—

→ यह जीवन का अतिंम संस्कार है। जिसमें शव को मुखाग्नि दी जाती है।

★ तिया / तीसरा / फूल चुनना :—

→ मृतक के तीसरे दिन शमशान जाकर अस्थियो को एकत्रित करना।

★ नई / भदर / भद्दर :—

→ मृतक के नवे दिन मृतक के परिजनो के द्वारा सिर व मुछ के बाल कटवाना।

औसर / मोसर / मृत्युभोज / 12वां / नुकता :—

★

→ मृतक के बारहवें दिन पण्डित व ब्राह्मणों को भोजन करवाकर दान - दक्षिणा देना।

★ इसी दिन मृतक के ज्येष्ठ पुत्र के सिर पर पगड़ी धारण की जाती है। जिसे उत्तराधिकारी संस्कार कहा जाता है।

जौसर संस्कार :—

★

→ जीवित व्यक्ति का मृत्युभोज देना।

★ सहरिया जनजाति अपने मृतकों की अस्थियों का विसर्जन सीताबाड़ी व कपिलधारा बारों में करती है।

★ सहरिया जनजाति में मृत्युभोज में महुआ व भूगड़े की सालेपा परोसी जाती है।

→ गरासिया जनजाति — गरासिया जनजाति के लोग अपने मृतकों की अस्थियों का विसर्जन (नक्कीझील) माऊन्ट आबू सिरोही में करते हैं।

→ गरासिया जनजाति के लोग मृत्युभोज के रूप में मांस व दलिया परोसा जा सकता है।

→ गरासिया जनजाति के मृत्युभोज का (मेक / कांधिया / लोकाई) कहा जाता है।

→ गरासिया जनजाति के मृतकों की स्मारक हूरे (हूरें) कहलाता है

→ भीलजनजाति के मृत्युभोज को (कायटा / कट्टा) कहा जाता है।

→ <u>मौताणा प्रथा :-</u> आदिवासी (भील) जनजाति में दुर्घटना से हुई मृत्यु के बाद मृतक के परिजनों के द्वारा लडाई झगडे से वसूली गई राशी।